Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

प्रवास, प्रवासी एवं समाजिक परिवर्तन

डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय[1]

मानव इतिहास में प्रवास की घटना आदि मानव के बढते विकास चरण के साथ जुड़ी है।

विश्व के किसी स्थान विशेष में जन्मा मानव आज विश्व के किसी अन्य भाग में विद्यमान है तो इसका एक मात्र कारण है प्रवास। मानव अपनी मूल आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। संसाधन कम हो और जनसंख्या अधिक हों, तो मूल आवश्यकतायें एक समस्या का रूप ले लेती है। इसके समाधान एवं अच्छी स्थिति के लिए मानव नये विकल्पों की तलाश करता है। यह आवश्यक नहीं कि उसे मूल स्थान पर ही नये विकल्प उपलब्ध हो जायें। इसके लिए कदाचित उसे अपने मूल स्थान को भी छोड़ना पड़ता है। मानव का मूल स्थान से अन्यत्र गमन ही प्रवास कहलाता है और गमन करने वाला व्यक्ति प्रवासी। दूसरे शब्दों मे मनुष्य का किसी एक भौगौलिक क्षेत्र से दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में सापेक्षतः स्थायी गमन की प्रक्रिया जिससे उसका सामान्य निवास बदल जाता है, प्रवास कहलाता है। इसमें जिस जगह में प्रवासी पहुचतें हैं, जहाँ से वे आते हैं और प्रवासी स्वयं कोई भी पहले जैसे नहीं रहते हैं।[1]

प्रवास की सैधांतिक रूप रेखा प्रस्तुत करना तथा मापना सर्वाधिक कठिन कार्य है। इसका कारण यह है कि प्रवास मृत्यु एवं जन्म की तरह पूर्णतः जैविकीय घटना नही है, बल्कि इसके विपरित यह एक भौतिक एवं सामाजिक लेन – देन की प्रकिया है।[2] वास्तव में प्रवास किसी व्यक्ति या समूह के एक समाज से दूसरे समाज में भौतिक संक्रमण को इंगित करता है। यह संक्रमण सामान्यतया एक सामाजिक परिवेश को त्याग कर दूसरे के ग्रहण करने की प्रक्रिया को सामाहित करता है।

मानव समाज में आब्रजन एवं प्रवजन के क्रम में जन प्रवास प्राचीन काल से प्रचलित एक सामाजिक घटना है। समय एवं समाज में परिवर्तन के साथ ही इसकी दर, प्रकृति, मात्रा एवं गत्यात्मकता में अन्तर हो सकता है। समाज में जैसे.जैसे सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता गया, वैसे वैसे प्रवास का क्रम बढ़ता गया। प्राचीन काल में ज्यों–ज्यों जनजीवन और आवास तथा स्थायित्व एवं अस्तित्व की समस्यायें बढ़ती गई, व्यक्तियों के समूह अस्थायी खानाबदोशी जीवन से विरत होकर स्थायित्व पूर्ण जीवन की अभिप्सा में ऐसे स्थलों की ओंर प्रवासित होने लगे, जहाँ जीवन की प्राथमिक

[1] असिसेटन्ट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग, मदन मोहन मालवीय पीजी कालेज भाटपार रानी, देवरिया, उ0 प्र0

आवश्यकताओं जैसे भोजन, जल, आवास, आवागमन, संचार, इत्यादि की सुविधायें उपलब्ध हो सके। इससे समाज का संश्लिष्ठ स्वरूप उभरा। इस सन्दर्भ में दुर्खीम का अभिमत है कि प्रवास श्रमविभाजन एवं विशिष्टीकरण का मूल भूत कारण है। [3]

विगत काल में प्रवास की घटना पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि इसके विविध स्वरूप दिखलाई पड़ते है। जहाँ संख्या पर दृष्टि डाली जाय तो बृहद एवं अल्पसंख्यक प्रवास, तथा काल के आधार पर स्थायी एवं अस्थायी प्रवास तथा आन्तरिक एवं बाहय प्रवास का स्वरूप दिखलाई पड़ता है।

भारत में प्रवास की दशा एवं दिशा पर दृष्टि डाली जाय तो स्पष्ट होता है कि इसके सभी स्वरूप दिखलाई पड़ते हैं। स्थाई प्रवास में जहाँ व्यक्ति अपने मूल स्थान को त्याग कर सदा के लिए नये स्थान पर बस जाता है वहीं अस्थाई प्रवास में प्रवासी अपने प्रवासित स्थल पर स्थाई रूप से न बस कर कुछ समय के लिए निवास करता है एवं पुनः अपने मूल स्थान पर वापस आ जाता है। इस प्रकार के प्रवास को आर्थिक प्रवास भी कहा जाता है, क्योंकि ऐसे प्रवास मूलतः आर्थिक उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किये जाते हैं।

वस्तुतः वर्तामान समय मे स्थायी बाहय प्रवास की प्रवृत्ति बिल्कुल ही अल्प हो गई है। विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि, रोजगार के अवसरो मे कमी एवं स्वराष्ट्र चेतना के विकास के कारण विभिन्न देशों ने अन्य देशों के लोगों को अपने यहाँ आने एवं स्थायी प्रवासित होने से सम्बंधित नियमों को कठोर बना दिया है। अस्थायी प्रवास का वर्तमान समय में श्रेष्ठ उदाहरण खाड़ी के देशों में प्रवास है। निश्चित अवधि के लिए विभिन्न कार्य करने हेतु भारतीय मजदूर खाड़ी के देशों में प्रवास करते हैं। ये मजदूर प्रवास के समय ही एक निश्चित समय एवं वेतन तथा अन्य सुविधाओं के समझौते पर खाड़ी के देशो मे जाते हैं। एक समय सीमा समाप्त होने पर वापस चले आते हैं। इन्हें वहाँ स्थायी प्रवास की अनुमति प्राप्त नही है।

काल चक्र ने मानव जीवन की गतिविधियों को प्रभावित किया, जिससे प्रवास की प्रवृति में अन्तर आया। प्राचीन विश्व में स्वेच्छाचारी प्रवास, मध्यकालीन विश्व मे बाध्यकारी प्रवास तथा आधुनिक काल में प्रवास गन्तव्य राज्य की नीति एवं कानून तथा प्रेषक राज्य के बीजा, पार पत्रों द्वारा नियंत्रित एवं निर्देशित हो रहा है। प्रवासियों के गन्तव्य का नवीन उदीयमान क्षेत्र पश्चिम एशिया है, जहां बाहर से श्रमिक आ रहे है। इनमें सउदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात का स्थान महत्वपूर्ण है।

भारत मे स्वतंत्रता के बाद अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास का प्रथम चरण 1950 से 1970 तक माना जा सकता है, जिसमें भारत से प्राविधिकी, चिकित्सा, व्यवसायिक आदि क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त लोग औद्योगिक रूप से विकसित देशों में प्रवास किये।[4] द्वितीय चरण का अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास खाड़ी के देशों के ओर विशेष रूप से उन्मुख है। यह द्वितीय चरण का प्रवास प्रथम चरण के प्रवास से दिशा एवं स्वरूप दोंनों मे भिन्न था। इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेशता यह थी कि उत्प्रवास स्थायी तौर पर न होकर अस्थायी तथा कु छ निश्चित समय के लिए एक अनुबंध के अन्तर्गत होता है और इसमें समय

सीमा पहले से ही तय हो जाती है।[5]

सत्तर के दशक के प्रारम्भिक वर्षो मे चमत्कारिक घटना के अन्तर्गत पेट्रोल एवं पेट्रोलियम उत्पादो में आशातीत मूल्य वृद्वि हुई, जो पांच गुना से भी अधिक थी।[6] इन खाड़ी के देशों जो तेल उत्पादक देश हैं, को अनपेक्षित धन प्राप्त हुआ। जो वहाँ के आधारभूत संरचना के निर्माण एवं भवन निर्माण मे मुख्यतः लगा। इसके लिये इन देशों को कुशल, अकुशल तथा अर्द्धकुशल तीनों कोटियों के श्रमिकों की आवश्यकता थी, जो स्थानीय स्तर पर अनुकूल शर्तो पर उपलब्ध नहीं थे। इस कमी को भारत सहित एशिया के विभिन्न देशों ने पूरा किया एवं आज भी पूरा कर रहे हैं।

भारत से खाड़ी के देशों मे प्रवासित होने एवं पुनः वापस आकर अपने द्वारा उपार्जित धन स्थानीय क्षेत्रों मे उपयोग की दृष्टि से सबसे अधिक संख्या भारत के केरल राज्य की है। इसके बाद उत्तर प्रदेश का स्थान है। जहाँ के पूर्वी उत्तर प्रदेश के घनी आबादी वाले क्षेत्र से अकुशल श्रमिक खाड़ी के देशों में कुछ निश्चित समय के लिए रोजगार हेतु जाते हैं एवं कुछ वर्षो तक रह कर उपार्जित धन को स्थानीय क्षेत्र में लाकर उसका उपयोग उन कार्यो के लिए करते हैं जिनकी आवश्यकता उनको सबसे अधिक रही है। जिसके प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ रहे हैं।

इस सम्बंध में अनेक अध्ययन बताते हैं कि वापस आये प्रवासी श्रमिकों ने अपनी पूँजी को कृषि, व्यापार, मे निवेश किया, जिसके परिणाम स्वरूप उनके जीवन स्तर में सुधार के साथ साथ उनके सोच में बदलाव दिखलाई पड़ते हैं।[7] इनके धन का उपयोग मकान बनवानें एवं भूमि के क्रय में अधिक हुआ।[8] इनके द्वारा उपार्जित धन से इनकी सामाजिक संस्थाओं एवं सम्बन्धो में परिवर्तन हो रहा है और ये श्रमिक सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में ग्रामीण क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं।[9]

केरल के सन्दर्भ में किये अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनमे व्यापक आधार पर परिवर्तन दिखलाई पड़ रहा है, जो सामाजिक ताने बाने को परिवर्तित कर रहे हैं एवं सामाजिक संगठन पर इसका व्यापक असर भी दिखलाई पड़ रहा है। यहाँ पर परिवार के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है , जिसमे एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ रही है। प्रवास के कारण स्त्रियों में निर्णय लेने की जिम्मेदारी में वृद्धि हुई है तथा इनके प्रभुत्व वाले परिवारों की संख्या बढ़ रही है। वस्तुओं के उपभोग में गुणात्मक परिवर्तन आया है, मकान के स्वरूप एवं गुणवत्ता में परिवर्तन एवं वृद्धि हुई है। भोजन की आदतों में परिवर्तन आया है, शिक्षा के प्रति ललक बढ़ी रही है, जिसके कारण अधिक मात्रा में निजी स्कूलों की स्थापना हुई है। लोगों में फैशन के प्रति लगाव बढ़ा है, पहनावें में परिवर्तन आया है, परम्पराओं के पालन मे परिवर्तन के साथ भव्यता दिख रही है, विवाह की पार्टियाँ भव्य एवं अपव्यय का स्थान बन गई हैं।[10]

पूर्वी उत्तर प्रदेश के अध्ययन से भी इस बात की पुष्टि होती है कि खाड़ी के लौटे प्रवासी मजदूरों में एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ी है।

इनके द्वारा अपने कमाये गये धन का उपयोग सबसे अधिक मकान बनवाने, कृषि भूमि खरीदने में उपयोग हुआ है। इन क्षेत्रों में पक्के मकान इनकी पहचान बन गए हैं। मजबूत आर्थिक स्थिति, मकान, कृषि क्षेत्र आदि ने पड़ोसियों के साथ सम्बंधों को बेहतर बनाया तथा परिवार की सामाजिक प्रस्थिति पहले के अपेक्षा ऊँची मानी जा रही है। इनको सामूहिक निर्णय में महत्व मिल रहा है। बच्चो के शिक्षा के प्रति इनका दृष्टिकोण बदला है, परम्परागत शिक्षा के स्थान पर व्यवसायिक शिक्षा को अधिक महत्व प्रदान कर रहे हैं तथा अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में शिक्षा देने का प्रयास कर रहें हैं। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर यह पाया गया कि महिलाओं को कृषि एवं अन्य परम्परागत कार्यो से अलग कर लिया गया, जो कि स्थानीय क्षेत्र में उच्च प्रस्थिति महिलाओं का अनुकरण है क्योंकि उच्च प्रस्थिति घरों की महिलायें कृषि एवं बाहय कार्यो मे भाग नहीं लेती हैं।

खाड़ी से लौटे प्रवासियों ने पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से स्थानीय राजनीति में भी कदम रखा है। राजनीति एव धन का सम्बन्ध वर्तमान राजनीति की एक आवश्यक बुराई के रूप मे प्रकट हुई है। वैसे में इनके पास कुछ पैसे ऐसे हैं जो चुनाव की प्रक्रिया को प्रभावित भी कर रहे हैं। स्वयं उनमें चयनित होकर गाँव की राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं। ये अपने तीज, त्योहार, परम्परा आदि को पूर्व की भांति ही मना रहे हैं किंतु उनके मनाने का तरीका बदला है। इनको मनाने मे अधिक धन खर्च हो रहा है किंतु उनके प्रति उनका दृष्टिकोण एवं आस्था पहले जैसे ही है। स्थानीय क्षेत्र में खाड़ी देशों के धन से दहेज की मात्रा बढ़ गई है।

यह भी उल्लेखनीय है कि खाड़ी से लौटे प्रवासी अपने धन का उपयोग कृषि भूमि खरीदने मे किये हैं, जिसके कारण स्थानीय क्षेत्र में प्रभुत्ववादी जातियों एवं अधीनस्थ जातियों के शक्ति संतुलन में परिवर्तन दिखलाई देता है। भूमि का विकेन्द्रीकरण हो रहा है जिससे निम्न जातियां शक्ति के केन्द्र के रूप मे उभर रही हैं। कृषि कार्यो मे नये तरीकों एवं विचारों का समावेश हो रहा है तथा नवाचारों को सहजता के साथ स्वीकार किया जा रहा है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रवास की दशा, दिशा एवं प्रकार में परिवर्तन के साथ साथ इसके द्वारा व्यापक सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न किया जाता है। वर्तमान में अस्थायी प्रवास एवं प्रवासी अपने द्वारा उपार्जित धन का प्रयोग जहाँ अपनी भौतिक संसाधनो को जुटाने मे लगे हैं, वही वह परम्परागत प्रभु जाति को चुनौती भी दे रहे हैं।

सन्दर्भ सूची

1. Smith. T. Lynn (1960) Fundamentals oF Poulation Study.Lippincott co. New York p – 419
2. Zelinsky. Wilber (1971) The hypothesis of the mobility Transition p – 201
3. Durkhiem Emile (1935) The Division Of labour in Society translated by Jorges.

4. Nayyar, Deepak (1989) international Labour migration From India.In Rashid Amjad (ed) To gulf And Back I.Lo New Delhi APTEP.P-95-96
5. Nayyar Deepak (1989) Ibid P 96
6. Monolo I Abella (1995) Asian migrant and contract workers in the Middle East. In Robin Cohen (ed) The Combridge survey of world migration P 420
7. Kaji Shanaj (1989) Domestic Impact of overseas migration. The Gulf and Back. ILO new delhi APTEPP.p (1967 – 96)
8. Jain P.C (1990) Rehabilitatig the Gulf And Return migrants, Man Power Jounral 26 (1) April – June 1990 P.P. 87 – 95
9. Lakhsh manaswamy , T (1990) Family Survival strategy and migration.Indian.journals of social work 51(3) July 1990 PP,473 – 85
10. Aboobcker Sidheeque, K.T. (1993) ImPact of Gulf migration oh the Socio – economic Life of malapuram District.